अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

<u>प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या</u>

4 1 प्रस्तावना

साधारणतया शोध प्रबंध के चौथे अध्याय में सामग्री तथा सूचनाओं का विश्लेषण एवं शोध परिणामों को प्रस्तुत किया जाता है ।यह सम्पूर्ण शोधकार्य का प्रमुख भाग होता है ।यहॉ पर प्रदत्तो का विश्लेषण उद्देश्यों के अनुसार किया गया है ।

4 2 'अनुगूंज' कार्यक्रम के संदर्भ में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विशेषज्ञों अभिमतों का विश्लेषण

विभन्न स्थानों से 'अनुगूजं' कार्यक्रम के संदर्न्भ में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, भोपाल में 30 विद्यार्थियों के पत्र आये थे। जिनका विश्लेषण निम्नलिखित सारणी के अनुसार किया गया है

4 2 1 उद्धेश्य 1 : रेडियो पाठों के प्रसारण से प्राथमिक कक्षाओं में पढनें वाले विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करना ।

निम्नलिखित सारणी मे विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के पत्रों से सम्बन्धित सूचनाएं दी गई है :

सारणी क्रमांक – 2

तिथिवार 'अनुगूंज' कार्यक्रम के बारे में सूचनायें

तिथि	कार्यक्रम	प्रस्तुतिकेन्द्र	पत्र जहॉ से प्राप्त हुए
9 9.98	आओ वृक्षों से बतियायें	ग्वालियर	नवलगॉव , सराफीपुरा
10 9.98	सिद्वार्थ से गौतम बुद्ध तक	भोपाल	ममदर , बकेवर , खोही , सीहोर , मुरा ,बादा , दुर्ग
13 9 98	म प्र विज्ञानतीर्थ	इन्दौर	नागदा
20 9 98	सोचो ऐसा क्यों होता है	इन्दौर	आसोट , चिचोली ,सुब्बाखेडा
1 10 98	इन्द्रधनुष सा मेरा देश	भोपाल	डोंगरगॉव
2 10 98	जय जवान , जय किसान,	–	रामोला मदिर ताल ,महासमुद रतलाम
9 10.98	हम भी आपके मित्र है	–	रतलाम
22 10 98	हमारे मौलिक कर्तव्य	– –	भरकाढोला (राजनॉदगॉव)
27 10 98	जहॉ न जाये रवि वहॉ जाये कवि	–	जबलपुर
28 10 98	इन्हें भी तो जानें	–	जबलपुर
30 10 98	पानी तेरे रुप अनेक	–	बेरला
1 11 98	म प्र की देन	–	जबलपुर
3 11 98	अमरकटक की यात्रा	–	बसाडी
4 11 98	वाद्य यत्र सारगी	–	जबलपुर
6 11 98	बारुद के ढेर पर	–	जबलपुर
8 11 98	नन्हे बालकों के अधिकार	–	जबलपुर
9 11 98	रस बिन सब सून	–	जबलपुर
10 11 98	कविता तेरे रुप अनेक	–	जबलपुर बन्टवाडा
11 11 98	हमारे चारों ओर गणित ही गणित	–	दुर्ग
13 11 98	लैस एक उपयोग अनेक	–	जबलपुर
15 11 98	रानी रुपमती की कहानी	–	सोण्डवा, जबलपुर
16 11 98	हमारी विरासत	–	जबलपुर
18 11 98	दया नहीं सहयोग चाहिए	–	जबलपुर, ग्राम–कापन,सीतामऊ चितौडगढ, चिरीमिरी, सरसैया
24 11 98	अमरवती–सस्कृत	–	सीतामऊ (मदसौर)
30 11 98	महानता जन्म से नहीं कर्म से होती है	–	डौण्डी लोहारा (दुर्ग)
6 12 98	ऐसे बना सविधान	–	बन्जारी, महासमुद
8 12 98	छत्तीसगढ का काशी	–	चिरीमिरी सिरपुर
10 12 98	गीतों में गणित	–	शाहपुरा, मस्तूरा

उपर्युक्त तालिका के अनुसार विद्यार्थियों के अभिमत का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया है :

- अनुगूंज कार्यक्रम में सभी छात्रों ने अपनी रुचि दिखायी है।
- 'सिध्दार्थ से गौतम बुद्ध तक' प्रसारित पाठ के उत्तर में बालकों ने इसे अत्यंत ज्ञानप्रद, रोचक एवं शिक्षाप्रद बताया है। इन श्रोताओं का मानना है कि इस पाठ से सेवा भावना का विकास होता है।
- 9.10.98 को प्रसारित 'हम भी आपके मित्र हैं' पाठ के प्रसारण में बालकों ने अपना अभिमत दिया है कि कार्यक्रम सरल भाषा में होने के कारण सरलता से समझा जा सकता है। उन्होंने इस कार्यक्रम को अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक बताया है।
- 4.11.98 को 'वाद्ययंत्र सारंगी' पाठ प्रसारित किया गया जिस पर जबलपुर के छात्रों ने अपने अभिमत में लिखा है कि वाद्ययंत्र की रचना, निर्माण प्रक्रिया, आरोह एवं अवरोह स्वरों की सरल-भाषा में दी गयी जानकारी अत्यंत रुचिकर लगी।
- 15.11.98 को प्रसारित 'रानी रुपमती की कहानी' को झाबुआ के विद्यार्थियों ने इसकी रोचक संवाद शैली व ऐतिहासिक जानकारी से भरपूर होने के कारण इसे अत्यंत पसंद किया है।
- 18.11.98 को 'दया नहीं सहयोग चाहिये' पाठ प्रसारित किया गया जो विकलांगता पर आधारित था। इस कारण इसके संदर्भ में अनेक स्थानों से पत्र प्राप्त हुए हैं। श्रोताओं के अनुसार इसके द्वारा काफी ज्ञानवर्धक व महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई व ब्रेल लिपि के विषय में भी इसमें जानकारी दी गयी थी जो महत्वपूर्ण थी। इस पाठ से आत्मनिर्भरता की शिक्षा मिलती है।
- 30.11.98 को प्रसारित 'महानता जन्म से नहीं कर्म से होती है' काफी पसंद किया गया। डोण्डी लौहारा (दुर्ग) के एक विद्यार्थी ने उदाहरण स्वरुप **अब्राहम लिंकन** के जीवन की लघुकथा लिखकर प्रश्नों के उत्तर दिये है।
- आष्टा (सीहोर) के विद्यार्थी को इस कार्यक्रम से सम्बन्धित एक शिकायत यह है कि कार्यक्रम का समय अत्यंत कम है। अतः समय

अवश्य बढ़ायें।

– एक श्रोता ने पत्र लिखकर अपनी परेशानी व्यक्त की है। उसका कहना है कि पाठ की गति इतनी तीव्र होती है कि में बहुत कुछ समझ नहीं पाता व प्रश्न भी नहीं लिख पाता और पता लिखने में भी असुविधा होती है।

– 6.12.98 को 'ऐसे बना संविधान' नामक पाठ का प्रसारण किया गया जो विद्यार्थियों द्वारा काफी पसंद किया गया। उन्होंने लिखा है कि संविधान के विषय में काफी महत्वपूर्ण जानकारियाँ हमें इस कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्त हुई जो हमारे लिये काफी लाभप्रद है।

422 उद्देश्य-2 : प्राथमिक शिक्षकों से रेडियो पाठों के प्रसारण के अभिमत ज्ञात कर उनका विश्लेषण करना|

शिक्षकों के अभिमत का विश्लेषण निम्नानुसार है:

– 29.10.98 को प्रसारित पाठ 'जहाँ न जाये रवि वहाँ जाये कवि' में एक शिक्षक ने इस कार्यक्रम को अत्यंत प्रभावी एवं शिक्षा की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम बताया है। इन्होंने अनुगूंज के सभी कार्यक्रमों की अत्यंत प्रशंसा की है।

– 28.10.98 को पाठ 'इन्हें भी तो जानें' की प्रस्तुति में संप्रेषणनीयता अत्यंत प्रभावपूर्ण लगी।

– 01.11.98 के पाठ 'म. प्र. की देन' के संदर्भ में शिक्षकों ने कुछ कठिनाईयों का वर्णन किया है। जैसे कभी –कभी कार्यक्रम की अस्पष्टता एवं जल्दी-जल्दी बोलने से कुछ बातें समझ में नहीं आती।

– 6.11.98 को प्रसारित पाठ 'बारुद के ढेर पर' वर्तमान परिवेश पर आधारित था। पटाखे की ध्वनि से आणविक विस्फोट की प्रस्तुति अभिप्रेरणापूर्ण एवं वास्तविक लगी। पोखरण विस्फोट अत्यंत रुचिकर शैली में प्रस्तुत किया गया।

– 9.11.98 के पाठ 'रस बिन सब सून' में शिक्षक ने पाठ की संगीतमय प्रस्तुति और ध्वनि प्रभाव को प्रभावशील बताया है।

– 10.11.98 के पाठ 'कविता तेरे रुप अनेक' की प्रस्तुति के संदर्भ में इन्हें पाठ का संप्रेषण रुचिकर तथा गीत–संगीत व कविता द्वारा छन्दों का रसास्वादन उत्तम लगा।
रोचक शैली ध्वनि संयोजन काव्यात्मक एवं साहित्यिक गरिमा से परिपूर्ण पाठ इन्हें पसंद आया।

– जबलपुर के एक शिक्षक ने इस कार्यक्रम को अत्यंत पसंद किया है तथा इस कार्यक्रम को छात्रों व शिक्षकों के मध्य का कार्यक्रम कहा है तथा लिखा है इससे शैक्षिक समस्याओं का समाधान सरलता से हो जाता है।

– सीतामऊ (इंदौर) के एक शिक्षक ने अपनी परेशानी को संकुल मीटिंग में रखने का निवेदन किया है। उनकी परेशानी है कि 140 बच्चों को एक शिक्षक कैसे नियंत्रण में रख सकता है।

423 उद्वेश्य-3 : विशेषज्ञों के अभिमत के आधार पर रेडियो पाठों की प्रभाविता का विश्लेषण करना।

अगस्त 98 से प्रसारित 'अनुगूंज' (शैक्षिक–कार्यक्रम की प्रभाविता देखने के लिये आकाशवाणी, भोपाल, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, भोपाल एवं जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान भोपाल के **विशेषज्ञों के माध्यम से कुछ अभिमत सामने आये हैजिनका विवरण इस प्रकार है :**

– कार्यक्रम के उद्देश्यों में उन्होने स्पष्ट किया कि– ज्ञान का विकास करना बच्चों का शैक्षणिक उन्नयन एवं पढ़ने में रुचि जागृत करना, कठिन शैक्षणिक बिन्दुओं की जानकारी देना इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य है।

– इन विशेषज्ञों के अनुसार इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के पूरे परिणाम अभी सामने नहीं आये हैं लेकिन पत्रों द्वारा पता चला

Regional Institute LIBRARY Bhop

है कि कुछ बच्चे इस कार्यक्रम को रुचिपूर्वक सुनते हैं । इस कार्यक्रम को पसंद करने वाले श्रोताओं की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है ।स्कूलों की भूमिका उदासीन होने के कारण इन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रतिशत कम है लेकिन फिर भी कुछ सीमा तक अपेक्षित सफलता प्राप्त हुई है।

– इस कार्यक्रम के संदर्भ में शिक्षकों से अपेक्षायें की जा रही थीं कि वे इस कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक नियमित रुप से सुने और छात्रों को इस कार्यक्रम को सुनने के लिये प्रेरित करें। क्योंकि शिक्षकों द्वारा ही इस कार्यक्रम का ज्ञान बच्चों को हो सकता है। अगले दिन बच्चे कार्यक्रम से सम्बन्धित अपनी जिज्ञासाओं को शिक्षक के सामने प्रस्तुत करें और शिक्षक उन जिज्ञासाओं का समाधान करें।

– इस कार्यक्रम को सुनकर जन समूह से एस.सी.ई.आर.टी., भोपाल में पत्र आतें हैं जो इस कार्यक्रम की सराहना करते है।आकाशवाणी में फोन द्वारा भी अभिभावक एवं बच्चे इस कार्यक्रम की प्रशंसा करते हैं व इस कार्यक्रम से सम्बन्धित सुझाव भी भेजते हैं जो इस कार्यक्रम में आवश्यक सुधार करने के लिये उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। हालांकि यह जनभागीदारी पर्याप्त नहीं है फिर भी दिशा निर्देश तो मिल रहे है।।

– शैक्षिक कार्यक्रम 'अनूगूंज' के लिये शिक्षकों को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कुछ निर्देश दिये गये थे जिन पर प्रत्येक गुरुवार को होने वाली संकुल बैठक में शिक्षकों से चर्चा की गई।

– इस कार्यक्रम में भी अनेक कठिनाईयाँ सामने आ रहीं हैं जिनमें प्रमुख रुप से स्कूल शिक्षकों की पर्याप्त भागीदारी न होना है। इसके अतिरिक्त रेडियो स्कूल में नहीं के बराबर है, कहीं-कहीं बिजली का प्रबंध नहीं है, जहाँ पर है, उनका रखरखाव ठीक नहीं है। दूरदर्शन का प्रभाव अधिक होने से बच्चे रेडियो सुनना पसंद नहीं करते। विभिन्न विषय जैसे विज्ञान, गणित को केवल श्रव्य माध्यम से स्पष्ट नहीं किया जा सकता।

- विशेषज्ञों के अनुसार इस कार्यक्रम के कुछ कमजोर बिन्दु भी है जिन पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। **विशेषज्ञों के अनुसार कमजोर बिन्दु निम्न लिखित हैं:**

- बच्चों को इस कार्यक्रम के विषय में कोई जानकारी नहीं है।
- कार्यक्रम एक तरफा शिक्षण का रुप है जिसमें श्रोताओं की भागीदारी संभव नहीं है।
- केवल श्रव्य माध्यम होने के कारण बच्चे एकाग्रता से कार्यक्रम नहीं सुनते है तथा इसमें त्वरित प्रतिपुष्टि की संभावना नहीं है।
- श्रव्य माध्यम होने के कारण गणित व विज्ञान जैसे विषयों को अधिक शामिल नहीं किया जा रहा है।
- जो आलेख लिखे गये हैं उनका स्तर अच्छा नहीं है लोग सुनने की भाषा को लिखने की भाषा में लिख रहे हैं जैसे :- प्रदूषण के निम्नलिखित कारण हैं- उपयुक्त संदर्भ में इनका वर्णन आगे दिया गया है आदि-आदि।
- पाठो के संम्पादन में सुधार की आवश्यक है।

इस कार्यक्रम को प्रभावपूर्ण बनाने के लिये
इन विषेशज्ञों ने कुछ सुझाव दिये हैं जो निम्नलिखित है :

- बच्चों में रेडियो सुनने की आदत विकसित की जाए।
- कार्यक्रम में गणित व पर्यावरण के पाठों को पर्याप्त संख्या में शामिल किया जाय।
- आलेखों की भाषा को और अधिक सरल किया जाये।
- शाम का समय बच्चों के खेलकूद का होता है अतः इसका शाला समय पर प्रसारण हो।
- कार्यक्रम का अधिक से अधिक प्रचार समाचार पत्रों एवं शिक्षा विभाग के माध्यम से किया जाये।
- स्कूलों में शिक्षकों के द्वारा इस कार्यक्रम के लाभ बताये जायें।

- कार्यक्रम बातचीत की भाषा में होना चाहिये।
- पाठों के प्रसारण की गति न तो अधिक जल्दी और न ही अधिक धीमी हो वरन यह समीचीन होना चाहिए।
- कार्यक्रम की समय-सीमा बढ़ाना आवश्यक है।
- सप्ताह में एक दिन बच्चों के पत्रों का उत्तर शिक्षकों या विशेषज्ञों द्वारा आकाशवाणी से प्रसारित किया जाना चाहिए।

पत्रों के विश्लेषण द्वारा पता चलता है कि यह कार्यक्म (अनुगंज) अत्यंत लोकप्रिय होता जा रहा है। प्रारम्भ में इसके श्रोताओं की संख्या कम थी लेकिन धीरे-धीरे यह कार्यक्रम श्रोताओं को रुचिकर लगने लगा है। पहले की अपेक्षा अब पत्रों की संख्या बढ़ गई है। इससे स्पष्ठ है कि श्रोताओं की भी संख्या बढ़ रही है।

श्रोताओं के पत्रों के माध्यम से इस कायक्रम की कुछ अच्छाईयाँ व कमियाँ भी प्रकाश में आयी जिनका विवरण निम्नलिखित है:

4 3 'अनुगूंज' कार्यक्रम की अच्छाईयाँ

- यह कार्यक्रम बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने में सहायक है।

- यह विधि परम्परागत विधि से हटकर है इसलिये पाठों की रोचकता बड़ जाती है।

- बीच-बीच में कवितायें होने से पाठ रुचिकर लगता है और प्रभावपूर्ण भी।

- पाठों की प्रस्तुति विभिन्न विधियों जैसे:- कहानी, आत्मकथा, नाटक, साक्षात्कार, परिचर्चा द्वारा होने से इनमें नवीनता लगती है।

- पाठोंमें पार्श्व संगीत के कारण पाठ मधुर लगता है।

- पाठों के प्रसारण में में बच्चों को शामिल करने से पाठ में कृत्रिमता नहीं लगती।

- बच्चों को इस कार्यक्रम के माध्यम से अपने विषय की व्यापक जानकारी प्राप्त होती है।

- रेडियो के माध्यम से दी गयी जानकारियाँ अधिक समय तक स्थायी रहती हैं।

- बच्चे जब कोई प्रेरणास्पद पाठ सुनते है तो उन्हें उस पाठ से आदर्शो, सदाचरण, बलिदान, देशप्रेम आदि भावनाओं की शिक्षा मिलती है।

- प्रसारण के दौरान बच्चे बीच- बीच में प्रश्न भी करते हैं जिससे बच्चों में प्रश्न पूछने का कौशल विकसित होता है।
- रेडियो पाठ सुनते समय ऐसा लगता है जैसे रेडियो में जो कुछ भी बताया जा रहा है वह हमारे सामने प्रत्यक्ष घटित हो रहा है।
- रेडियो पाठ बच्चों के मन को उद्वेलित करते है।
- सफल अभिव्यक्ति के कारण बच्चे सीखने के प्रति उत्साहित होते है।
- रेडियो पर प्रसारित होने के कारण इन पाठों को कहीं भी सुना जा सकता है, चाहे घर हो या घर के बाहर या किसी अन्य स्थान पर।
- इसके माध्यम से किसी भी विषय की जानकारी सरलतापूर्वक दी जा सकती है।

रेडियो पाठों को सुनने वाले श्रोताओं को इन पाठों में कुछ कमियाँ स्पष्ट हुई, जो इस प्रकार है:

44 अनुगूंज कार्यक्रम की कमियाँ

- किसी-किसी पाठ में पाश्‍र्व संगीत की तेज ध्वनि के कारण संवाद स्पष्ट समझ में नहीं आते।
- पाठ की गति तीव्र होने से भी पाठ समझ में नहीं आता।
- कभी-कभी प्रसारण की अस्पष्टता से भी आवाज स्पष्ट सुनाई नहीं देती।
- कठिन शब्दों के प्रयोग होने से बच्चे उन शब्दों का अर्थ नहीं समझ पाते।
- रेडियो पाठों के साथ शिक्षक का उपस्थित होना अनिवार्य है जो बच्चों की जिज्ञासाओं को शांत कर सके।
- पाठ की समयावधि कम है।
- प्रसारण समय शाम का होने से बच्चे इसे नहीं सुन पाते क्योंकि यह समय उनका खेलने का होता है।

- रेडियो पर प्रसारित होने के कारण इसे दोहराया नहीं जा सकता।
  रेडियो पाठों के द्वारा बच्चे अपनी जिज्ञासाओं को तुरन्त शांत नहीं कर सकते।
- बच्चे लगातार 20 मिनिट तक शांत होकर पाठ नहीं सुन सकते।
- यदि बच्चे बीच में कुछ आवश्यक जानकारी लिखना चाहें तो पाठ की गति तेज होने के कारण वे नहीं लिख पाते।
  उपयुक्त कमियों को देखते हुए इन्हें दूर करने हेतु कुछ सुझाव भी प्रेषित किये गये हैं जो निम्नलिखित है:

45 'अनुगूंज' कार्यक्रम के लिये सुझाव

- समय की अवधि बढ़ायी जाय।
- आवाज की स्पष्टता का विशेष ध्यान रखा जाय।
- आवश्यक स्थान पर ही संगीत दिया जाय और उसकी ध्वनि पाठों के समझने में अवरोधक न हो।
- सरल शब्दों का प्रयोग पाठों में किया जाय जिससे विद्यार्थी इसे आसानी से समझ सकें।
- प्रसारण की गति कुछ धीमी की जाय।
- बच्चों के खेलने के समय इसका प्रसारण न किया जाय।
- सभी विषयों को समान रुप से शामिल किया जाय।
  बच्चों की जिज्ञासाओं के समाधान हेतु कोई प्रावधान रखा जाय। जैसे बच्चे पत्रों के द्वारा जो प्रश्न पूछें उनका उत्तर आकाशवाणी द्वारा दिया जाय।
- विषय-वस्तु को विस्तारपूर्वक समझाया जाय।
- पद्य- शिक्षण के पाठ भी सम्मिलित किये जाय।
- पाठ के अंत में इसका सारांश भी दिया जाय।
- जो बच्चे प्रश्नों के सवाल लिखकर भेजते हैं उनके लिये कुछ प्रोत्साहन की व्यवस्था भी होना चाहिए।

- पाठ का शीर्षक अंत में भी देना चाहिए।
- भाषा व्याकरण के पाठ भी शामिल किये जाय।

विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट है कि :

- विद्यार्थियों के द्वारा प्रेषित पत्रों के आधार पर 80 प्रतिशत (24) विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम को अत्यंत पसंद किया है।
- 20 प्रतिशत (6) विद्यार्थियों ने उक्त कार्यक्रम से संबंधित कठिनाइयों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।
- शिक्षकों से प्राप्त अभिमत के आधार पर 75 प्रतिशत (15) शिक्षकों ने 'अनुगूंज' कार्यक्रम को रोचक, प्रभावपूर्ण एवं ज्ञानप्रद कहा है।
- 25 प्रतिशत (5) शिक्षकों ने कार्यक्रम में आने वाली कठिनाईयों एवं समस्याओं को दूर करने के लिये प्रयास करने को कहा है और साथ ही अपने सुझाव भी दियें है।